श्री शिरिडी साई के निंदारोपण का खंडन

श्री श्री श्री दत्तस्वामी

श्री आदिशंकराचार्य के द्वारा स्थापित चार महा पीठों में से एक पीठ (द्वारका पीठ) के अध्यक्ष श्री शंकराचार्य ने भगवान दत्तात्रेय का अवतार श्री शिरिडी साईबाबा का अनेक दृष्टिकोणों से निंदा की। उनके द्वारा की गई निंदाओं का श्री दत्तस्वामि जी ने संस्कृत भाषा में समाधान दिया। उस का हिंदी अनुवाद डॉ अन्नपूर्णा (हिंदी प्रो , हैदराबाद केन्द्रीय विश्व विद्यालय, हैदराबाद) ने किया , जो निम्न प्रकार है:

दैवनिंदा, गुरु निंदा और राजनिंदा

श्री द्वारकापीठाधीश कहते हैं कि शिरिडी में श्री साईबाबा का जो समाधी मंदिर है, वह 'कब्रिस्तान' है। इस प्रकार कहकर बाबा मंदिर जाने वाले भक्तों की निंदा कर रहे हैं वे मंदिर नहीं कब्रिस्तान जा रहे हैं, इस का समाधान है:

श्री आदिशंकराचार्य भगवान शिवजी का अवतार है। भगवान शिवजी का निवास स्थान कब्रिस्तान ही है ना! इस तरह की निंदा दक्षप्रजापति ने भी सतीदेवी के सामने किया तो उसका फ़ल क्या है? सब लोग जानते हैं। क्रोध के कारण भगवान शिव रौद्ररूप वीरभद्र बनगया है और दक्ष के सिर को खंडित कर दिया। यहां आश्चर्यचकित होनेवाली बात यह है कि ये द्वाराकापीठाधीश आदिशंकराचार्य की शिष्य परंपरा में ही आते हैं । इन के परम गुरु श्रीआदिशंकराअचार्य स्वयं 'भगवान शिवजी' का अवतार है । कब्रिस्तान कहकर मंदिर की निंदा करके भगवान शिवजी की निंदा कर रहे हैं। यह दैव निंदा ही है ना! ज्यादातर लोग आदिशंकराचार्यजी की समाधी का दर्शन कर के उस की पूजा भी करते हैं। माने ये द्वारकापीठाधीश ने अपने गुरु श्री आदिशंकराचार्य जी की समाधि को भी कब्रिस्तान बोलकर निंदा की । यह गुरु निंदा है ना!

भारतदेश में कोई राजनैतिक पार्टी केंन्द्र में सरकार बना सकती है। वह राजनैतिक पार्टि माने भारत सरकार जाति पिता महात्मागांधी जी की जयंति के दिन उनकी समाधि का दर्शन कर के उसपर फूल माला चढा कर पूजा करते हैं। समाधी की पूजा की निंदा करना भारत सरकार की निंदा होगी। ये राज निंदा है ना!

भिन्न मतों का समन्वय

श्री आदिशंकराचार्य ने भारत देश के भिन्न मतों का समन्वय किया। उदाहरण के रूप में वैष्णवमत और शैवमतों को लेते हैं। वैष्णव मत का मूल तत्व और दार्शनिक सिद्धांत है- 'विष्णु' ही भगवान है। इस मत की बाह्य संस्कृति (धर्म) के अनुसार माथे पर ऊर्ध्वत्रिपुंड्र को तिलक के रूप में पहनना और गले में तुलसी माला डालना आदि । शैव मत के मूल तत्व और दार्शनिक सिद्धांत है भगवान 'शिव' ही एकैक परमात्मा हैं। इस शैवमत की बाह्य संस्कृति (धर्म) में भभूति की तीन आडी रेखाओं को तिलक के रूप में पहनना और रुद्राक्षमाला को गले में डालना आदि। ये दोनों मत

एक दूसरे के विरोध करते हैं और प्राचीन काल में दोनों मतों के अनुयायी एक दूसरे को मारने तक तैयार हो जाते थे। इस केलिए इतिहास हमारे सामने गवाह के रूप में उपलब्ध है ।

श्री आदि शंकराचर्य ने इन दोनों मतों के दार्शनिक तत्वों का समन्वय इस प्रकार किया। तर्कातीत भगवान (परब्रह्म) चैतन्य शक्ति के रूप में बिना कोई बाह्य नामरूपों के साथ प्रकाशित हो रहे हैं । इस परब्रह्म के द्वारा दो तेजो रूपों को उपाधि के रूप में ग्रहण किया गया है। एक तेजो रूप विष्णु नामक उपाधि है ,परब्रह्म उसे ग्रहण कर 'विष्णु' कहकर बुलवाता है।दूसरा तेजो रूप 'शिव' नामक उपाधि है, परब्रह्म उसे ग्रहण कर 'शिव' कहकर बुलवाता है। इन दोनों तेजो रूपों में स्थित परब्रह्म एक ही है। इस प्रकार हर अवतार उपाधि में संपूर्ण रूप में उपस्थित रह्ना परब्रह्म के तर्कातीत शक्ति के कारण ही संभव होता है। अत: शिव और विष्णु बाह्य नाम रूपों में अलग अलग दिखाई दें तो भी आंतरिक स्वरूप में, परब्रह्म की दृष्टि में दोनों एक ही है और समान हैं। एक ही परब्रह्म हैं। फलस्वरूप शिव ही विष्णु हैं, विष्णु ही शिव हैं। इस प्रकार दोनों मतों के दार्शनिक तत्वों में एकता को साद लिया। इस के कारण श्री आदिशंकराचार्य के सिद्धांत (स्मार्त मत) का पालन करनेवाले हर व्यक्ति शिव और विष्णु के बीच में कोई भिन्नता न देखते हुए (दोनों मतों को) एक ही मत के रूप में (स्मार्त मत) देख रहे हैं।इस प्रकार एकता की दृष्टि से सोचनेवाले व्यक्ति दोनों मतों के बाह्य संस्कृतियों के बीच में भी भेद क्यों देखेगा ? इस तरह एकता की दृष्टि से देखनेवाले व्यक्ति रुद्राक्ष और तुलसी माला तथा तिलक की आडी और तिरची रेखाओं के बीच कोई भी अंतर नहीं देखता है। फिर भी श्री आदि शंकराचार्य ने माथे पर तिलक के रूप में आड़ी बबूति रेखाओं को और गले में रुद्राक्ष माला को पहना।

श्री आदिशंकराचार्य के समय में राजा लोग शैवमत के होने के कारण वैष्णव मत के भक्तों के प्रति दुर्व्यवहार करते थे। अत: वे (श्री आदिशंकराचार्य) पहले राजाओं में परिवर्तन लाना चाहते थे। इस लिए उन्होंने शैव मत के बाह्य संस्कृति के अनुसार उन राजाओं को खुश करने और उन के नजदीक पहुंचने के लिए शैव वेषधारण करते थे । उन्होंने विष्णु भगवान पर भी अनेक स्तोत्रों की रचना की।

श्री आदिशंकराचार्य के सिद्धांत के अनुसार शिव और विष्णु को एक ही परब्रह्म के रूप में अपनालिया जाय तो अल्ला को भी परब्रह्म के दूसरे सर्व व्यापी महा शक्ति का बाह्य आकार के रूप में लेना कोई गलत काम नहीं है। शिव और विष्णु जैसे ही अल्ला भी बाह्य नाम ही है ना! शिव, विष्णु और अल्ला तीनों के अंत: स्वरूप में एक ही परब्रह्म स्थित है । अत: तीनों एक ही है। यही परब्रह्म ने ही इस भूमि पर मानव जाति की सृष्टि की। सिर्फ हिंदुओं केलिए शिव और विष्णु के रूप में दिखता है तो इस्लाम मत के व्यक्तियों को सर्वव्यापी महा शक्ति तेजो रूप में दिखाई दिया ।निराकार अल्ला है और साकार शिव और विष्णु है . इन दोनों मतों में अगर एक ही मत सच है तो दूसरे मत द्वारा भगवान ने कुछ जीवों को धोका दिया । हिंदू मत में भी निराकारवाद है। अल्ला तेजो रूप में दिखाई दिया ऐसा इस्लाम मत ग्रंथ में है. हिंदू मत के वेद में भी यह कहा गया कि परब्रह्म एक तेजो रूप(यक्ष नाम से)में देवताओं के सामने दिखाई दिया । अगर हम यह कहें कि एक मत ही सच है तो भगवान पर पक्षपात दोष सिद्ध होगा। पिता यदि किसी कारण के बिना अपने बच्चों में से कुछ बच्चों को आदर दें और बाक़ी बच्चों का निरादर करें तो वह पक्षपात दोष हुआ ना! इस तरह के पक्षपात दोष परब्रह्म पर भी लगाना ठीक नहीं है। चूँकि नाम रूप रहित तर्कातीत परब्रह्म मुसलमानों को 'अल्ला'नाम से एक तेजो रूप में दिखते हैं, यही बोलना पड़ेगा । अत: हिन्दू और इस्लाम मतों के दार्शनिक सिद्धांतों को श्री साई बाबा ने समन्वय करके एकता को प्रकट किया। सिद्धांत की दृष्टी से साई बाबा और श्री आदिशंकराचार्य के बीच में

कोई अन्तर नहीं है। दोनों भगवान शिव के ही अवतार है। भगवान शिव ने श्री आदिशंकराचार्य के रूप में पंडितों के लिए और श्री साईबाबा के रूप में सामान्य जनता के लिए अवतार ग्रहणकिया। इस भूमि पर अवतरित होकर भक्तों में एकता लाया जैसे- जैसे श्री आदिशंकराचार्य शैव मत के अनुसार वेषधारण करते थे , वैसे ही श्री साई बाबा भी इस्लाम मत के अनुसार वेषधारण करते थे। उस समय में इस्लाम मत के लोग थोडे गुस्से स्वभाव के रहते थे। इस लिए उन लोगों तक पहुंचने के लिए और उन लोगों में परिवर्तन लाने केलिए श्री साई बाबा भी मुसलमान जैसे पोशाक पहनते थे। मुसलमान और हिन्दूओं में एकता लाने के लिए प्रयास करते थे। परन्तु हिन्दू मत के खंडोबा, हनुमान जैसे देवताओं के स्तोत्र पाठ भी करते थे, वैसे ही हमेशा 'अल्ला मालिक' भी बोलते थे।

अगर आप (द्वारका पीठाधीश) श्री साईबाबा की निंदा करते हैं तो वह अपने पीठ के संस्थापक गुरु श्री आदि शंकराचार्य की निंदा ही होती है। आप स्वयं स्मार्त मत के अनुयायी होकर श्री साईबाबा को दूषित करना ठीक ऐसा ही है जैसे पिता अपने पुत्र को गधे के बच्चे कहकर डांट रहे हैं। यह गाली देनेवाले पिता ने यह नहीं सोचा कि वह खुद को गाली दे रहा है।

गहरे विश्लेषण के द्वारा मतों का एकीकरण

स्वामी विवेकानंद ने वैश्विक स्तर पर विश्व के सभी मतों का समन्वय किया । प्रस्तुत संदेश देनेवाले श्री दत्त स्वामी ने यह महसूस किया कि इस प्रकार का एकीकरण सिर्फ गहरी विश्लेषण द्वारा ही संभव है, जो तार्किक विवेचन से ही प्रकट हो पाएगा। परंतु हृदय से आनेवाली भावुकता (प्रेम) से संभव नहीं है।आजकल बुद्धि का तर्क ही अस्तित्व में है, हृदय बहुत समय पहले ही अदृश्य हो गया ।अगर मानव बुद्धि के तर्क से समन्वय हो जाता है तो दुनिया में किसी को राजी करने की आवश्यकता नहीं है।क्यों कि तार्किक समाधान से वे खुद राजी हो जाएंगे। सभी मतों का एकीकरण (सर्व मत समन्वय) को श्री दत्त स्वामी ने प्रस्तुत तार्किक चर्चा के द्वारा सिद्ध किया ।

ईसवी सन् १७००(1700) में भारत के हिन्दू मत का परिचय अन्य देशों को हुआ है। भारत देश का आविष्कार १७०० में वास्कोडिगामा द्वारा हुआ है।उस के पहले भारत और अन्य देशों के बीच में कोई संबंध नहीं था। तब तक कृष्ण भगवान का संदेश (गीता) भारत से बाहर नहीं गया तथा ईसा के प्रवचन (बाईबिल) भारत तक नहीं पहुंचा । हर एक मत यह कहता है कि अपने मत के भगवान (कृष्ण और ईसा) पर विश्वास नहीं करते तो वे नरक में जाएंगे।

हिन्दू धर्म के अनुसार ई .पूर्व १७०० में ईसाई धर्म के पूर्वज नरक में गये और ईसाई धर्म के अनुसार सन् १७००के पहले भारत के हिन्दू मत के पूर्वज नरक में गए। *जो लोग नरक में गए ,उन को (ईसाई भक्तों को)गीता नहीं मिला और हिंदू भक्तों को बाइबिल नहीं मिला. यह उन की गलती नहीं है . बिना गलती वे नरक में पहुंच गए. इससे भगवान के ऊपर पक्षपात दोष लगता है. क्यों कि भगवान जब गीता का बोध भारत में किया तो तब तुरंत सभी देशों में पहुंचना चाहिए. ऐसे ही जब भगवान ने जरुसलेम में बाईबिल बोध किया तब तुरंत उस का बोध सभी देशों को पहुंचना चाहिए. हर मत यही कहता है कि सिर्फ उन के भगवान ही इस भूमि की सृष्टि कर्ता और इस पूरी मानव जाति के निर्माता भी हैं। अलग अलग मतों के अनुसार अलग अलग भगवान हैं तो एक ही भगवान द्वारा इस प्रकार एक ही भूमि की सृष्टि और एक ही मानव जाति का निर्माण असंभव है। अनिवार्य रूप से एक भगवान अस्तित्व में होना चाहिए । उसी एक भगवान ने इस भूमि की और मानव जाति की सृष्टी की। यदि एक निश्चित मत के निश्चित भगवान अस्तित्व में हैं तो मतों के अनेक भगवानों द्वारा मानव जाति सहित अनेक भूमि होनी चाहिए । लेकिन मानव जाति सहित एक ही भूमि है। उन के द्वारा दिये गये मत ग्रंथों में अगर भेद है तो बाह्य देशों के लोगों को उस मत ग्रंथ को तुरंत सुनने का मौका नहीं मिला और वे अपनी गलती

के बिना नरक में पडा। यह अन्याय है। अत: वे लोग नरक में गए तो उन की गलती क्या है? यह तो बिलकुल भगवान की पक्षपात दृष्टि के कारण बन जाएगा। हमारे मतों का एकीकरण होने से भगवान के ऊपर इस प्रकार के पक्षपात के दोषारोपण नहीं डाल सकते हैं।

हमारा विश्लेषण :

सृष्टि के आरंभ से ही एक ही भगवान हैं जिस ने इस भूमि की सृष्टि की। इस पृथ्वी पर मानव जाति की रचना की और अब तक विभिन्न नामों से , विभिन्न रूपों में ,विभिन्न मतों में आए। एक ही सिद्धांत को भिन्न भाषाओं में भिन्न मत ग्रंथों द्वारा दिया। अत: सभी मत ग्रंथो का विषय एक ही है और भगवान भी एक ही हैं। इसलिए इस भूमि पर किसी क्षेत्र के या अन्य मत के लोगों को अपने अपने मत ग्रंथ गीता , बाईबिल आदि का ज्ञान न मिलने की स्थिति नहीं बनती है। जैसे जो व्यक्ति इस भूमि पर अपने धर्म के प्रवचन को प्राप्त करते हैं, वैसे ही सभी लोग अपने अपने मत से संबंधित प्रवचन द्वारा वही ज्ञान प्राप्त करते हैं। धार्मिक व्यक्ति कहीं भी , कभी भी भगवान के पास(माने मोक्ष के लिए) पहुंच सकता है। कोई भी मत हो और कोई भी धर्म हो, सभी मतग्रंथों में ज्ञान एक ही है। अत: किसी भी मत ग्रंथ द्वारा वही ज्ञान प्राप्त होगा। जिन को भगवान पर अविश्वास है, वे नरक में जाएंगे। अत: भगवान के ऊपर पक्षपात दोषारोपण कोई भी मत नहीं डाल सकता । भगवान को पक्षपात दोष नहीं लगता है।

शाकाहारी मार्ग और दैवत्व:

श्री साईबाबा मांसाहारी होने के कारण श्री द्वाराका पीठाधीश उन्हें देवता नहीं मानते हैं। जिस राम की पूजा करते हैं, वे राम भी मांसाहारी है ना। फिर साई की पूजा नहीं करनी चाहिए ऐसा क्यों कह रहे हैं? आहार बाह्य संस्कृति से संबंधित है। फ़िर भी प्राणी को मारने की दृष्टि से मांसाहार खाना पाप ही है। परंतु भगवान एक जगह अवतार ग्रहण करता है तो वहां के जीवों की बाह्य संस्कृति का पहले खुद अनुकरण करता है, उन से दोस्ती बढाते हैं। उस के बाद धीरे धीरे उस जीव को ज्ञान का उपदेश देता है। इस के द्वारा जीव को अहिंसा के मार्ग पर लाने का प्रयास करता है। कीचड के गड्ढे में डूबनेवाले को अर्थात अज्ञान में डूबनेवाले का उद्धार करने केलिए संरक्षक को भी उसी कीचड के गड्ढे में कूदना पडता है ना ! इस तरह की कीचड के गड्डे में कूदने से शरीर पर कीचड लग जाता है। दौडनेवाले सांड को पकडने केलिए और उसे रोकने केलिए कुछ कदम उस के साथ दौडकर रोकना पडता है। (उसी प्रकार अज्ञानी लोगों का उद्धार करने केलिए कुछ समय तक उस के साथ दौड कर रोकना पडेगा।) ऐसी अज्ञानी लोगों का उद्धार करने केलिए कुछ समय अवतार पुरुष को भी उन के अज्ञान का अनुकरण करना पडेगा । इस क्रम में घायल जटायु पक्षी को देखकर दुखी होनेवाले श्री राम और प्रेम से बकरी को गोद लेनेवाले ईसा की प्रेम भावना को समझना चाहिए।

पंरतु साईबाबा को मांसाहारी कहना उचित नहीं है। मांसाहारी भक्तों के लिए साईबाबा ने मांसाहार बनवाकर खिलाया , लेकिन खुद उन्होंने मांसाहार नहीं खाया । एक भक्त ने भैसे को बेत से मारा तो उस पर पडनेवाले घाव को अपने शरीर पर दिखानेवाले बाबा मांसाहारी होंगे क्या? किसी मांसाहारी ने अपने पाप के समर्थन में इस प्रकार साईबाबा को मांसाहारी के रुप में आरोपित किया होगा। जिस क्षत्रिय जाति में श्रीराम का जन्म हुआ ,उस क्षत्रिय जाति के मांसाहार लक्षण के साथ राम को मांसाहारी कहना उचित है ना। अनेक बार मैं ब्राह्मण हूं बोलनेवाले श्री साईबाबा के संदर्भ में इस तरह कहना विश्वास करने लायक नहीं है। चूंकी मांसाहारी लोगों ने अपने पापों के समर्थन करते हुए इस प्रकार साईबाबा पर निंदारोपण किया होगा। इन बातों पर (राम जैसा भगवान के अवतार मांसाहारी होना) ध्यान न

देते हुए अगर तुम मूर्खता से साईबाबा को मांसाहारी कहोगे तो वह पहाड खोदकर चूहे को पकडना जैसा ही है। क्यों कि मांमसाहार और दैवत्व का कोई संबंध नहीं है। यह श्रीराम के संदर्भ में पता चल चुका है।

साईबाबा ने स्वयं बकरी को मार डाला कहनेवाली बात बिलकुल असत्य है। एक ब्राह्मण भक्त की आस्ता की परिक्षा लेने केलिए एक एकादशी के पवित्र दिन बाबा ने उसे कहा कि "बकरी को मारो" । वह ब्राह्मण भक्त बकरी को मारने केलिए तैयार होगया। तब बाबा ने उसे रोकते हुए कहा कि "मैं खुद मारूंगा"। उसी क्षण तुरंत बकरी किसी के कुछ किए बिना जमीन पर गिर पडी और मर गई। इस से साई बाबा ने यह सिद्ध किया कि' सृष्टि ,स्थिति और लय तीनों भगवान के अधिकार है। भगवान का नराकार सिर्फ़ ज्ञान बोध ही करता है'। इस में साई बाबा ने बकरी को तलवार से खुद नहीं मारा। बाबा की बातों का अर्थ यह है कि उस बकरी जीव का मरण समय आगया है।

श्रीसाई हिन्दू ही है

श्री द्वारकापीठाधीश को साई बाबा पर इस प्रकार इलजाम लगाना नहीं चाहिए कि □साई बाबा मुस्लिम हैं, हिन्दू नहीं है। मुस्लिम संस्कृति को हिन्दू मत पर थोप रहे हैं□। यह ठीक नहीं है। श्री साई हिन्दु ब्राह्मण है। वे हिन्दू मत के देवताओं की पूजा करते हुए भक्तों को भी हिन्दू देवताओं की पूजा करने केलिए प्रेरित कर रहे थे। एक बार खूब बारिश हो रही थी , उस समय साईबाबा बारीश में भीगते हुए नीचे सीढी पर बैठे थे। क्यों कि ऊपर सीढी पर हनुमान जी की मूर्ति थी। एक भक्त ने उन्हें ऊपर चढकर बैठने केलिए कहा। परंतु साई ने मना करते हुए ये कहा कि □प्रभु के नीचे स्थान पर ही सेवक को रहना चाहिए अर्थात नौकर और मालिक को बराबर बैठना नहीं चाहिए□।एक बार एक मुसलमान भक्त ने बाबा की कृपा से संतान सुख पाया। उस खुशी में मिठाई लेकर बाबा के पास पहुंचा तो साई ने कहा कि □उस मिठाई को हनुमान मंदिर में बांटो□। बाबा कहने लगा कि अल्ला और हनुमान के बीच में कुस्ति हुई थी,उस में हनुमान जी की जीत हुई। हमेशा अल्ला मालिक बोलने वाले बाबा अचानक इस प्रकार क्यों बोल रहे हैं? इस से यह अर्थ निकलता है कि उस मुसलमान भक्त के मताहंकार को निकालने केलिए ऐसा कहा गया। यहां यही ग्रहण करना चाहिए कि अल्ला पर भक्ती की कमी नहीं हैं, साथ में हिन्दु देवता पर भी साई बाबा अनन्य भक्ति दिखाते थे। बाबा 'मैं हिन्दू ब्राह्मण हूं' बोलते हुए जनेऊ संस्कार में किये गये कान के छेद को भी दिखाते थे। एक बार विजय दशमी के दिन विवस्त्र होकर बाबा गुस्से में आकर ऐसे चिल्ला रहे थे कि □देखो ! मैं मुस्लिम हूं या हिंदू? देखो! मुझे सुन्नत करायी कि नहीं? इन सारी बातों से श्रीसाई बाबा के हिन्दू होने का प्रमाण प्रस्तुत होता है , उनके मुसलमान धर्म की आदतें देखकर हमें यह समझना चाहिए कि श्री शिर्डी साईबाबा द्वारा हिन्दू और इस्लाम मतों के बीच समन्वय लाने के प्रयास हो रहा है। उस के बाद श्री शिर्डी साईबाबा द्वारा जब सत्यसाई के रुप में अवतार ग्रहण किया गया, उस समय ईसाई फ़ादर जैसे वस्त्र पहनने के द्वारा इन दोनों मतों के बीच (हिन्दू और ईसाई) समन्वयता लाने का प्रयास किया गया है।

श्रीसाई बाबा की गुरुपरंपरा है

श्रीद्वारकापीठाधीश ने साईबाबा पर यह इलजाम लगाया कि □उन्हें गुरुपरंपरा नहीं है□। लेकिन यह सच नहीं है। क्यों कि 'श्री बालाजी के भक्त श्री वेंकूसा ही साईबाबा के गुरु थे'। गुरु परंपरा सदाशिव शंकराचार्य परंपरा जैसे ही

वेंकटेश्वर वेंकूसा परंपरा भी है ना! श्रीसाई बाबा भी उन के गुरु श्री वेंकूसा द्वारा प्राप्त ईंट को बडे ही प्यार से छुपा कर रखा था।

भगवान के अवतारों की संख्या

"भागवत् ग्रंथ में भगवान की २२ अवतारों के बारे में बताया गया।उस में साईबाबा का नाम नहीं है" कहकर आक्षेप लगानेवाले श्री द्वारकापीठाधीश की जो कुशलता दिखाई गई ,उसी से उन के ज्ञान के मूलाधार * पर भी शंका उत्पन्न हो रही है। वेद में कहा गया कि श्री आदि शंकराचार्य भगवान शिवजी का अवतार है(व्युसकेशायच) इस वेद मंत्र का अर्थ है "महादेव ही मुंडित सिर के साथ शंकराचार्य के रूप(नराकार) में आयेंगे"। परंतु 22 अवतारों में श्री आदिशंकराचार्य का भी नाम नहीं है। भागवत ग्रंथ से भी उत्कष्ट हैं वेद प्रमाण (शृतिरेव गरीयसी) । गीता में कहा गया कि' इस लोक में जब भगवान की आवशयकता होगी तब भगवान नराकार में प्रकट होंगे' (यदा यदा ही...) । इसप्रकार के पौराणिक वचनों(बातें) की संख्या भगवान को सीमित नहीं कर सकती। श्री आदिशंकराचार्य भी इन 22 अवतारों की सूची में नहीं थे । दुर्भाग्यवश इस संख्या के आधार पर श्रीद्वारकापीठाधीश यह भी कहेंगे कि" श्री आदिशंकराचार्य भी भगवद्वतार नहीं है"।भागवत् यह भी कहता है कि 'भगवान के अवतार गिनती के बाहर है'.(अवताराध्य संख्येया:) इस का अर्थ है 'भगवान का अवतार सिर्फ २२ नहीं हैं'.

गंगास्नान पर निषेध

श्री द्वारकापीठाधीश ने साई भक्तों पर गंगा स्नान करने से रोक लगाया। यह घनीभूत अज्ञान का संकेत है। किसी भी नदी का पानी हो तो भी वह २: १ निष्पत्ति में हैड्रोजन और आक्सिजन मिल कर रसायनिक योग से पानी बनता है। नदी के पानी में दूषित पदार्थों के साथ खनिज पदार्थ भी होते हैं। इन को अलग करते हैं तो बाकी पानी सभी नदियों में समान ही है। परंतु गंगाजल में दूषित पदार्थ ज्यादा हैं। जो अज्ञान रुपी दोषों का संकेत हैं। यहां दूषित गंगाजल अज्ञान रुपी बुद्धी का संकेत हैं। अज्ञान रहित साईभक्तों को गंगास्नान करने से रोकना उचित ही लग रहा है। यहां द्वारकापीठाधीश सही सोच रहे हैं। वर्तमान में केन्द्र सरकार की तरफ़ से गंगाजल का शुद्धीकरण करने का प्रयास हो रहा है। यह प्रयास ऐसा है जैसे पैनी विश्लेषण के साथ श्री दत्तस्वामी द्वारा दिए गए इस संदेश से मत दुराभिमानि(अहंकार) लोगों की बुद्धि का भी शुद्धीकरण हो जाएगा। गंगा जैसे ही अनेक नदियां हिमालय से जन्म लेकर सागर में मिल रही हैं। अन्य नदियों में स्नान करने पर रोक नहीं लगाया। गंगा स्नान को ही क्यों रोक रहे है? सभी स्तोत्रों मे से विशिष्ट है 'महिम्ना स्तोत्र'। इस में कहा गया कि जैसे ही नदियां सीदी या वक्रगति से चल कर सागर में मिलती हैं वैसे ही भिन्न भिन्न संस्कृतियों से युक्त भिन्न मत एक ही भगवान के पास पहुंच रहे हैं। (पयसामर्णव इव) । श्री आदि शंकराचार्य ने भी यही कहा कि " ब्रह्मपदार्थ एक ही सच है और नाम रुप असत्य है"। इसी प्रकार नदियों का भी नाम रुप असत्य है और पानी पदार्थ सत्य है। एक बार साईबाबा ने भी इसी बात का प्रस्ताव किया। एक ही पानी का नाम सभी भाषाओं में भिन्न भिन्न है । लेकिन पानी तो एक ही है ना!

वेद मंत्रों से उदाहरण प्रस्तुत करना

श्री द्वारकापीठाधीश के अनुसार 'वेद वचनों के प्रमाण के रुप में न दिखाने वाले श्री साईबाबा भगवान नहीं है'। अज्ञान से साई पर निंदारोपण कर रहे हैं। वाल्मिकी रामायण में भी यह देखने को मिलता है कि श्री राम द्वारा वाली और जाबालि ऋषि को जो संदेश दिया गया था ,उस में भी श्री राम ने कोई वेद वाक्य का उदाहरण नहीं दिया। श्री राम ने जो संदेश दिया, निश्चित रुप से वह सब कुछ वेदों में है। परंतु वे सब श्रीराम द्वारा अपनी(खुद की) बातों में ही कहा गया। इसीप्रकार जब साईबाबा ने उपदेश दिया तब उन्होंने वेदों से उदाहरण नहीं दिये। किंतु उनके उपदेश की अवधारणा (अर्थ, भावतात्पर्य और ज्ञान) अवश्य वेदों में पाया जाता है। वेद शब्द का अर्थ है (विदुल ज्ञाने)□ ज्ञान□। ज्ञान का तात्पर्य केवल वेद शब्द से नहीं है. बल्कि साधारण शब्दों के माध्यम से भी वही ज्ञान व्यक्त हो सकता है । उसी ज्ञान को बताते समय वही वेद की बातें उदाहरण के रुप देने की आवश्यकता नहीं है। वही ज्ञान सभी भाषाओं में समझना भी वेदों को समझाना ही है ना। जब भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया तब उन्होंने अपनी बातों का प्रमाण(वेदों से) नहीं दिया। फ़िर भी वेद सार ही गीता है। क्यों कि वेदों द्वारा जो ज्ञान बताया गया, वही ज्ञान गीता द्वारा भी बताया गया। लेकिन आदिशंकराचार्य ने अपने भाष्यों में वेद वाक्यों को प्रमाण के रुप में बताये थे।जब पंडितों से चर्चा करते थे, तब श्री शंकराचार्य जी पंडितों की परंपरा के अनुसार ऐसा करते थे। इस प्रकार करने से पंडित लोग उस से संतुष्ट होते थे। अगर उस तरह उदाहरण वेदों से नहीं देते तो पंडित लोग संतुष्ट नहीं होंगे। यदि वेद मंत्रो को उदाहरण के रुप में देना ही भगवान की पहचान है तो पंडित भी वेदों का उदाहरण देते हैं। इस के अनुसार वे भगवान है क्या? उसी प्रकार श्री राम और श्री कृष्ण ने भी अपने संदेशों में वेद मंत्रों का प्रमाण नहीं दिया, इसलिए वे भी भगवन नहीं हैं क्या? यहां सिर्फ़ आदि शंकराचार्य ही भगवान है क्या? श्रीद्वारकापीठाधीश की दृष्टि में वेदमंत्रों को उदाहरण के रुप में न देनेवाले श्रीसाई और श्रीराम में कोई अंतर नहीं है। इसके कारण द्वारकापीठाधीश भगवान रुपी श्रीराम और भगवान साई बाबा (दोनों भी सामान्य मानव के रूप में अवतरित हुए।) के बीच में अंतर कैसे बताएंगे? ऐसा कैसे कह सकते हैं कि अपने संदेशों में वेद मंत्रों को उदाहरण के रुप में न दिखानेवाले साई और श्री राम के बीच में भेद है। साई भक्त भगवान श्री राम की पूजा नहीं करनी हैं ऐसा कहने वाले श्री द्वारका पीठाधीश इन दोनों के बीच में कैसे अंतर दिखाएंगे?

गहराई से देखे तो ब्रह्मसूत्र ***(शास्त्रयोनित्वात्)*** कहते हैं कि भगवान ही वेदों की सृष्टिकर्ता हैं। गीता भी यही कहती है ***(वेदांतकृत)***। जब भगवान नराकार ग्रहण करते हैं ,तब उसे अपनी ही बातें वेदमंत्रों के प्रमाण के रूप में देने की आवश्यकता नहीं हैं (तोता जैसे रटकर अपनी बातों को फ़िर से बोलने की आवश्यकत नहीं है)। भगवान अपनी ही बातों को और भावनाओं को भिन्न भाषाओं द्वारा भिन्न समयों में व्यक्त कर सकते हैं। यदि हम आदिशंकराचार्य को भी देखते हैं तो यह जान सकते हैं कि उन्होंने वेदार्थ को श्लोक के द्वारा जब स्तोत्रों के रूप में व्यक्त किया है वहां वेदमंत्र का प्रमाण नहीं दिया। उन केलिए कोई प्रमाण नहीं है क्या ?अगर वेद वाक्यों को उदाहरण के रुप में देकर उसके अर्थ को गलत रुप में दिखाए तो वेद का ही उदाहरण होते हैं क्या? वेद के सत्यार्थ को दूसरी भाषा में समझाए तो भी वेद के ही उदाहरण बनते हैं। जब भगवदवतार पुरुष बात करता है तो उन की सारी बातें वेद ही है। नराकार भगवान की सारी बातें वेद ही है। जब पंडित लोग प्रवचन देते हैं ,तब अपनी बातों को सच प्रमाण समझाने केलिए वेदों का उदाहरण देना आवश्यक हैं। नराकार भगवान की बातें, उस नराकार में स्थित परमात्मा की ही है। परंतु बाह्य आकार का नहीं है। उसे प्रमाणित करने केलिए भगवान को (वेद से) उदाहरण देने की आवश्यकता नही हैं। पंडित लोग

भगवान नहीं है। इसलिए भगवान की बातों का प्रमाण वेद मंत्र द्वारा देना आवश्यक है। अपनी बातों केलिए स्वयं की बातें (वेद मंत्र को) भगवान कैसे प्रमाण के रुप में दिखाएँगे ? भगवान के द्वार व्यक्त कीगई बातें वेदों में ढूँढ सकते हैं। लेकिन उन के ज्ञान के प्रमाण को वेदों में ढूँढने की आवश्यकता नहीं है। अतः नराकार रूपी भगवान के भाव ही ज्ञान है, ज्ञान ही वेद है।

मूर्तिपूजा

'साई की मूर्तियों की पूजा करने वाले भक्त गण गलत रास्ते पर जा रहे हैं 'ऐसा सोचना पागलपन का संकेत है। श्रीद्वारकापीठाधीश के अनुसार "मूर्तिपूजा का लक्ष्य चेतना के साथ सच्चे रुप में योग्य होना चाहिए और साई की मूर्तियों में इन में से कोई भी लक्षण नहीं है"। लेकिन श्री द्वारकापीठाधीश जी मानते हैं कि अन्य मंदिरों की मूर्तियों में ये तीन लक्षण चेतना, सत्य और योग्यता होने के कारण वे पूजनीय बन गये। श्री द्वारकापीठाधीश का मानना यह है कि "उपरोक्त तीनों लक्षण उन मूर्तियों में प्राण प्रतिष्ठा करने के द्वारा उपस्थित होते हैं।उस के कारण जिस देवता की मूर्ति है वह देवता उस में उपस्थित होते हैं। अर्थात उस से संबंधित वेद मंत्रों को पढकर उन्हें आमंत्रित करते हैं। परंतु श्री साईबाबा से संबंधित कोई वेद मंत्र नहीं है। इस के कारण मूर्ति के अंदर प्राण प्रतिष्ठा करना व्यर्थ हो जाएगा"। ये सारी बातें श्री द्वारकापीठाधीश की हैं।अतः साई की मूर्तियाँ पूजा करने लायक नहीं है कहनेवाले उनकी बातें निम्न तीन कारणों से सहमत होने योग्य नहीं हैं।

1) आपने यह नहीं कहा कि आप के द्वारा की गई ये तीन लक्षण (पूजा का लक्ष्य, सत्य, चेतना और योग्यता)पूजा के कर्म काण्ड में होना चाहिए। ये वेदों में कहां है? नहीं बताया। ये वेदों में कही भी नहीं दिखाई देते । अगर वेदों में नहीं दिखाई देते तो इस का कोई प्रमाण नहीं है ऐसा कह रहे हैं । अतःइन का कोई प्रामाण नहीं है।

2) प्राण प्रतिष्ठा से संबंधित प्रक्रिया के मंत्रों में कही भी देवताओं का नाम नहीं है। वे सिर्फ़ जड मूर्तियों में प्राण प्रतिष्ठा करने केलिए प्रयोग किया जा रहा है। अतः साई से संबंधित वेद मंत्र नहीं है कहनेवाली आप की बातें हास्यास- पद है।

3) भक्तगण को यह मान कर चलना होगा कि देवताओं की जड मूर्तियों में चेतना है इसे समझकर सेवा करनी है। इसे समझे बिना इस पद्धति द्वारा सच में 'प्राण-प्रतिष्ठा ' हो रही है, सोचना मूर्खता है। यही भाव श्री साई बाबा की मूर्तियों पर भी रखकर उन का सेवन कर सकते हैं ना। इस प्रक्रिया के द्वारा सच में जड मूर्तियों में प्राण का प्रवेश नहीं हो रहा है। इस के बाद जड मूर्ति में कोई भी चलन, बोलना, सुनना, देखना आदि ये प्राण लक्षण कहीं भी नहीं दिखाई दे रहे हैं। जब एक पंखें में जडशक्ति विद्युत प्रवेश हुआ तो कम से कम चलन दिखाई दे रहा है।वैसे ही चलन प्रतिमा में नहीं दिखाई दे रहा है। प्राण का प्रवेश अनुभव के विरुद्ध है। अतः यह अनुभव प्रमाणिक नहीं है। इसलिए प्रमाणों में शृति, स्मृति, युक्ति एवं अनुभव के लक्षण शास्त्रों द्वारा मानते हैं। परंतु अंतिम लक्षण अनुभव इस के विरुद्ध है। क्यों कि मूर्ति के प्राण लक्षण हमारे अनुभव में दिखाई नहीं देते । अतः यह किसी भी रुप में प्रमाणिक नहीं है।

जीवों का उद्धार करने केलिए भगवान का सृष्टि में प्रवेश

श्री द्वारकापीठाधीश ऐसा कहते हैं कि "अत्रि और अनसूया दंपतियों को तीन बेटे पैदा हुए ,बडा बेटा चंन्द्र, तीसरा बेटा दूर्वासमुनि और मझला बेटा दत्तात्रेय मुनि हैं। इन तीनों बेटों में देवता लक्षण कही भी नहीं हैं। लोग श्री साई को दत्तात्रेय का अवतार मानते हैं। फ़िर भी कहीं भी उन में देवता गुण दिखाई नहीं देते" । उनकी बातें ऐसे लग रही हैं कि मानो उन का बचपना गया नहीं । भागवत्कथा के अनुसार यह कहा जाता है कि ऐकैक परब्रह्म के दर्शन केलिए अत्रि महामुनि अपनी पत्नी अनसूया के साथ रुक्षपर्वत पर तप किया । वेद यह कह रहे हैं कि' सृष्टि ,स्थिति और लय तीनों एकैक परमात्मा के द्वारा ही हो रहे हैं'।(येतोवा इमानि) इस के बावजूद सृष्टि कर्ता ब्रह्म, स्थिति कर्ता विष्णु और लय कर्ता शिव के अलग रुपों में अलग लोकों में रहना कैसे संभव है? यही अत्रिमुनी की शंका है। त्रिमूर्तियों ने प्रकट होकर यह बताया कि' हम तीनों एक ही हैं। सृष्टि स्थिति और लय कार्य कर रहे हैं'। अत्रि महामुनि ने उन से असहमति व्यक्त की। त्रिमूर्ति अलग अलग दिखाई देरहे हैं तो एक ही रुप में तीन कैसे हो सकते हैं? 'अत्रि' शब्द का अर्थ है जो तीन नहीं है। अतः अत्रि अपने नाम का सार्थक बनगये ।(अत्रि माने तीन नहीं है) तब त्रिमूर्तियों ने (संयुक्त) सम्मिलित होकर एक ही रुप में दर्शन दिया। इस एक ही मूर्ति में ब्रह्म, विष्णु और शिव तीनों के मुख हैं। फ़िर भी व्यक्ति एक ही है। तीन मुख अलग अलग हैं अर्थात् तीन मुखवाला एक ही शरीर (व्यक्ति) है। वेद ने परब्रह्म के बारे में जो निर्वचन दिया वह सटीक बैठता है यह स्वरुप (यतोवाइमानि -----, एक मेवअद्वितीयं---) यही त्रिमूर्तियों के मूल एकैक परब्रह्म का स्वरूप है। तर्कातीत परब्रह्म इस तरह एकैक रुप में उपस्थित हैं तथा अलग अलग त्रिमूर्ति के रुप में भी हैं। वह (अविभक्तं विभक्तेषु---गीता) तर्कातीत परब्रह्म शक्ती की महिमा के द्वारा संभव है। लौकिक सृष्टि से परे अलौकिक परब्रह्म के तत्व, लौकिक सृष्टि में उपलब्ध (पदार्थों में किया गया तर्क से परे है) होने वाले तर्क यहाँ काम नहीं करता।

अनसूया के गर्भ में यह एकैक परमात्म स्वरुप त्रिमूर्ति के रुप में बदल कर चंद्र, दत्त और दूर्वास नामक तीन बेटों के रुप में प्रकट हुआ। ब्रह्मांश, विष्णुअंश और शिवांश तीनों के अंश अलग अलग होते हुए भी, ये तीनों अंश मिलकर एकाकार हुए हैं। प्रथम और तृतीय मूर्तियों ने अपने ब्रह्म और शिव के अंशों को दत्त को देकर चले गये अर्थात त्रिमूर्तियों के समन्वय होकर एकमुख दत्तात्रेय के रूप में प्रकट हुए हैं। इस एक मुख मंडल में ही अन्य(ब्रह्म और शिव) दोनों के मुखमंडल की शक्तियों से युक्त दिखता है .इस संयुक्त रूप की स्पष्टता केलिए एक ही स्वरुप तीन मुखों के रुप में दिखाई देरहा है। अत्रि महामुनि वेद पंडित थे. इस स्पष्टता से उनकी शंका दूर होगई। इतनी महान अंतरार्थ वाली इस कहानी को (श्री दत्तात्रेय की) सिर्फ़ एक मुनि के वंशावली के रुप में देखना आप के आंखों के दृष्टि दोष के साथ आप की मति भी(मति दोष) मारी गई जैसे लग रहा है। इतना ही नहीं आप (द्वारकापी्ठाधीश) श्री आदिशंकराचार्य के बारे में यह भी कहसकते हैं कि वे एक केरल प्रांत के नंबूद्री ब्राह्मण युवक है। वेदों का अध्ययन किया हुआ पंडित है। उस के पास संपूर्ण जीवन का अनुभव नहीं है।(श्री आदि शंकराचार्य जी का जीवन काल ३२ साल ही था।) उनके भाष्य और उनके जीवनपरमार्थं को जबतक गहरी अंतरदृष्टी से विवेचन नहीं करेंगे तब तक यह समझ नहीं सकते कि वे साक्षात भगवान शंकर का अवतार है।

उपसंहार

तर्कातीत परब्रह्म (नैषातर्केण----,मांतुवेद नकश्चना ---) एक सचेतन नर शरीर रुपी भक्त में प्रवेश होकर नराकार के रुप में प्रकट होते हैं। इस नराकार से हम यह प्रयोजन पा सकते हैं कि धर्म को संकट स्थिति से रक्षा करके शांति की स्थापना करने के लिए, जो लोग मोक्ष की आशा करते हैं, उन्हें मुक्ति मार्ग दिखाने का और भक्तों को दर्शन, स्पर्शन, संभाषण और सहवास(भाग्य चतुष्टय) देने का मौका मिलता है। नराकार भगवान धर्म और मोक्ष मार्ग पर जीवों को चलने केलिए जिस तरह ज्ञान चाहिए, उस तरह का ज्ञान मार्ग दिखा सकता है। मुसलमान और हिन्दू मतों के बीच में जो विरोध है उस के कारण ही आज के मारण कांण्ड (उग्रवाद) हो रहे हैं। इसे खतम करना है तो सब से पहले समग्र रुप से दोनों मतों में समन्वय की स्थापना होनी चाहिए। यही उसका शाश्वत समाधान है। इस के लिए ही श्री शिरिडी साई और श्री सत्यसाई का अवतार प्रकट हुए। इन के अनुसार ही कार्यक्रम का स्वरुप बनता है। मतों के बीच में विरोधी भावना और झगडे होने से लोग दुखी होते हैं। मोक्ष मार्ग की साधना भी प्रताडित होती है। उस प्रकार की विशिष्ट कार्य पद्धति को समझे बिना, अवतार पुरुष की कीर्ति को सहन करने की शक्ति न होने से ईर्ष्या के कारण स्वार्थ और दुरहंकार से नराकार भगवान के प्रति आरोपण करना (अवजानंतिमां—गीता) कृष्णावतार से ही दिखाई देता है। नराकार के रुप में दिखाई देनेवाले हर अवतार पुरुष दत्त ही है (तर्कातीत परमात्म नरों को नराकार के रुप में)। "दत्त" शब्दार्थ का सारांश यही है कि तर्कातीत परमात्म लोगों केलिए नराकार के रुप में आंखों के सामने दिखना दत्त(दत्त माने तर्कातीत परमात्म नर रूप में नरों के लिए दिया गया) तत्व है। बुद्धी और तर्क से नहीं पाने वाले परमात्म आंखों के सामने नराकार के रुप में प्राप्त होना 'दत्त' शब्द का अर्थ है।

हर मानव को अपने साथ सहजीवन करने वाले मानव पर ईर्ष्या और अहंकार रहता है। इस के कारण है— दोनों के एक जैसा ही पांच भौतिक शरीर रहना। यही मानव तेजो रुप शरीर को धारण करने वाले देवता पर श्रद्धा रखते हैं। अपने साथ जीनेवाले नराकार भगवान का तिरस्कार करता है। भगवान के सेवक इंद्र आदि देवता के तेजो रुप पूजनीय होते हैं। इस प्रकार यादव कुल के लोगों ने नराकार रुपी श्रीकृष्ण को नहीं पहचाना और भगवान के सेवक तेजो रुपी इंद्र की पूजा करतने लगे। सूती कपडे पहननेवाले लोग रेश्मी कपडे पहननेवाले कलेक्टर के सेवक का भी आदर सम्मान करते हैं। लेकिन सूती कपडे पहननेवाले कल्क्टर का आदर नहीं करते हैं। यही मानव जीव मृत्यु के बाद तेजो रुप ग्रहण करते हैं। परम शिव आदि के तेजो रुपों में स्थित परमात्म को पहचाने बिना उन पर आदर भावना नहीं रखते है। इस प्रकार मानव जीव इहलोक में मानव रूप भगवान को तिरस्कार करने से और परलोक में तेजो रूपी बनकर तेजो रूपी भगवान को तिरस्कार करके, दोनों लोकों में सदा सर्वत्र भगवान से वंचित हो रहे हैं। यह बात वेद में कहा गया (इह चे द्वेदी दथा, द्वेदी दथ सत्य मस्ति) । इस का कारण यही है कि अपने शरीर जैसे शरीर भगवान को होता है तो निरादर भावना होती है और द्वेष पैदा होता है (प्रत्यक्षद्विषः -वेद) इस तरह असूया, घृणा और अहंकार युक्त मानव नराकार के द्वारा प्रत्यक्ष रुप में प्राप्त होनेवाले भगवान की सेवा किये बिना उन की जड मूर्तियों की पूजा करते हैं। श्री द्वारका पीठाधीश जी को इसी प्रकार के सामान्य मानव जैसी स्थिती रहने के कारण ही ईर्ष्या से श्री साई बाबा के ऊपर इस प्रकार निंदारोपण कर रहे है। इस तरह अयोग्य मानव को दूर रखने केलिए ही रजो-तमों गुणों को दिखाकर, उन लोगों से दूर होकर भगवान अपने कार्य करते हैं। भगवान श्री कृष्ण का जार चोर तत्व और साई का धूमपान इसी वर्ग के अंतर्गत ही आते हैं। इसे पहचाननेवाले तथा साधन करनेवाले भक्तों को ,ये उनकी विश्वास की परिक्षाएं होती है। इस प्रकार नराकार भगवान के रजस तमो गुण उस तरह के मानवों के साथ मिलजुलकर रहने

केलिए भी सहायक सिद्ध होते हैं। कुछ समय तक उनके साथ रहकर धीरे धीरे उनको परमात्म के मार्ग पर अवतार पुरुष लाते हैं। उनके सभी कोणों से तथा दृष्टियों से अवतार तत्वों को न समझनेवाले मूर्ख लोग प्रत्यक्ष नराकार भगवान को ठुकराकर हमेशा हमेशा केलिए खो रहे हैं और नष्ट प्राप्त कर रहे हैं।(महती विनष्टि: ---वेद) अपने मानव जन्म के उद्धेश्य को निरर्धक बना रहे है।

राम भक्त जांबवंत नामक भालू ने अपने जिद्दि स्वभाव के कारण भगवान विष्णु के अवतार राम और कृष्ण में भेद को मानकर भगवान श्रीकृष्ण के साथ कई दिन युद्ध किया। इसी प्रकार द्वारका पीठाधीश भी जिद्दि बनकर महादेव परमशिव के अवतार श्री शिरडी साई के बाह्य आकार(शिरडी साई-शिव रूपी, सत्य साई –शिव शक्तिरूपी और आनेवाले प्रेम साई –शक्ति रूपी अवतार होने के लिए श्री सत्य साई द्वारा कहीं गई कथा को जानना जरूरी है। उस कथा के अनुसार शिव और शक्ति तीन बार भारद्वाज के गोत्र में अवतार लेने के लिए भारद्वाज मुनि को वरदान दिया गया ।उसी वरदान के अनुसार शिरडी साई भारद्वाज गोत्र वाले ब्राह्मण जाति में , सत्य साई –भारद्वाज गोत्र के साथ क्षत्रिय जाति में अवतार लिया और प्रेमसाई , भारद्वाज गोत्र वैश्य जाति में अवतार लेगा। इस से भगवान को जाति भेद नहीं है यह मालुम होता है, क्यों कि तत्व ज्ञान का उपदेश (गीता) करनेवाला भगवान श्री कृष्ण ने यादव जाति में जन्म लिया। (यादव जाति उन तीनों जातियों से भिन्न है.) वही महादेव के अवतार श्री शंकराचार्य के बाह्य रूप और महादेव का अवतार शिरडी साई के बाह्य रूपों के भेद से भ्रमित होकर दोनों में स्थित एक महादेव को नहीं पहचान पा रहे हैं। शैव और वैष्णव मत का समन्वय करनेवाले श्री आदिशंकराचार्य, हिन्दू तथा इस्लाम मत का समन्वय करने वाले शिरडी साई अपने अपने समय के अनुसार वेषभूषा में भेद रखते थे। इस के कारण उन दोनों में बाह्य भेद दिखाई देता था। परंतु हमें यह पहचानना जरुरी है कि भगवान विष्णु ,शिव और अल्ला में एक ही तर्कातीत परब्रह्म उपस्थित हैं। इन तीनी के आंतरिक रुप में कोई अंतर नहीं है। यह समझना जरुरी है।

भगवान (परब्रह्म) को तर्कातीत कहकर बोलनेवाले तीन प्रामाणिक ग्रंथ (प्रस्थान त्रय)हमारे सामने हैं। वे तीन हैं—वेद (यतोवाचो, नमेधया--),भगवदगीता (मांतुवेद न--) और ब्रह्मसूत्र (जन्माद्यस्य---)। ये तीनों ग्रन्थ यह व्यक्त कर रहे हैं कि परमात्म स्वरूप के बारें में हम कुछ जान नहीं सकते । इस का कारण यह बताया जा रहा है कि भगवान ने आकाश (रिक्त स्थान) की सृष्टी की। अत: आकाश उस भगवान में होने की संभावना नहीं है। जो आकाश भगवान से पैदा हुआ है , वह आकाश अपनी सृष्टि के पहले, अपने कारण रूपी भगवान में नहीं हो सकता। अत: परमात्म में आकाश न होने के कारण , आकाश के लक्षण जो परिमाण है , वह भगवान में नहीं है। इस लिए परिमाण के बिना कोई भी वस्तु बुद्धि (तर्क) के अतीत है। इस प्रकार के तर्कातीत भगवान आंखों के सामने दिखाई देनेवाले नराकार में प्रवेश करके उसे तादात्म्य (एक ही होना) हो जाते हैं और ज्ञान का प्रचार करने केलिए अवतार पुरुष के रूप में आते हैं। भगवान द्वारा पंडितों के लिए श्री आदिशंकराचार्य के रूप में और अनपढ लोगों के लिए साई के रूप में नराकार ग्रहण किया गया। शिव ज्ञान दाता हैं(ज्ञानं महेश्वरात) । शिव तेजो रूप हैं तो साई और आदिशंकराचार्य नराकार हैं। शिव,विष्णु और ब्रह्म त्रिमूर्ति रूप तेजो रूप है। इन तेजो रूपों में और नराकारों में एकैक तर्कातीत परमात्म उपस्थित हैं। यह सत्य समझ सकते हैं तो मतों के बीच में परस्पर विरोध और झगडे नहीं होते हैं। सब मिलजुलकर शांति और प्रेम से रहेंगे तो ही विश्व शांति की स्थापना होगी। इस तरह का ब्रह्म ज्ञान न होने के कारण एक दूसरे का विरोध कर रहे हैं। अशांति फैला रहे हैं। बुद्धि से पानेवाली वस्तुएँ अनेक हो सकती हैं । लेकिन बुद्धि से परे(तर्कातीत)

वस्तुएं अनेक नहीं हो सकती हैं। इस लिए परब्रह्म या भगवान बुद्धि से परे होने के कारण एक ही हो सकते हैं। इसी सत्य का श्री आदि शंकराचार्य और श्री साई बाबा ने हमेशा प्रचार किया।

****